संचयी परीक्षा

कक्षा:7

विषय: हिन्दी

(हम पंछी उन्मुक्त गगन के, दादी माँ, हिमालय की बेटियाँ)

प्रश्न 1. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दें:- (1 x 4 = 4)

स्वर्ण-श्रृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले |
ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नीले नभ की सीमा पाने,
लाल किरण-सी चोंच खोल
चुगते तारक अनार के दाने |

क. कवि और कविता का नाम लिखिए ?
ख. पक्षी किसके बंधन में अपनी गति, उड़ान सब भूल गए हैं ?
ग. पक्षी कहाँ झूला झूलने के सपने देख रहे हैं ?
घ. पक्षियों के क्या अरमान थे ?

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए | (3 x 2 = 6)

क. हर तरह की सुख सुविधा पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद क्यों नहीं रहना चाहते ?
ख. लेखक को अपनी दादी माँ की याद के साथ-साथ बचपन की और किन-किन बातों की याद आती है?
ग. काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता क्यों कहा है ?

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए (व्याकरण आधारित)- (5 अंक)

(क) द्वंद्व समास के दो उदाहरण लिखिए |
(ख) 'स्वर्ण- श्रृंखला', 'तारक- अनार' में विशेषण छाँटिए |
(ग) 'चंचल-नदियाँ', 'संभ्रांत महिला' में विशेषण-विशेष्य बताइए |
(घ) जिस प्रकार नदी को उलटा लिखने पर दीन बनता है उसी प्रकार दो शब्द लिखो जिनको उलटा लिखने पर एक सार्थक शब्द बन जाए|
(ङ) 'बोल-बोलकर ' तथा 'पीट-पीटकर' शब्दों का प्रयोग करते हुए एक-एक वाक्य बनाइए |

उत्तरमाला

उत्तर-1) क) कविता- हम पंछी उन्मुक्त गगन के, कवि- शिवमंगल सिंह सुमन |

ख) स्वर्ण-श्रृंखला के बंधन में |

ग) वृक्ष की सबसे ऊपर की टहनी के सिरे पर |

घ) पक्षी उड़ते- उड़ते नीले आकाश के उस छोर तक पहुँच जाना चाहते हैं, जहाँ वह समाप्त होता है

उत्तर-2)

क) पक्षी के पास पिंजरे के अंदर वे सारी सुख सुविधाएँ है जो एक सुखी जीवन जीने के लिए आवश्यक होती हैं, परन्तु हर तरह की सुख-सुविधाएँ पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद नहीं रहना चाहते क्योंकि उन्हें बंधन नहीं अपितु स्वतंत्रता पसंद है। वे तो खुले आकाश में ऊँची उड़ान भरना, बहता जल पीना, कड़वी निबौरियाँ खाना ही पसंद करते हैं।

ख) जब लेखक को मालूम हुआ कि दादी माँ की मृत्यु हो गयी है तो उनके सामने दादी माँ के साथ बिताईं गई कई यादें सजीव हो उठती है। उसे अपने बचपन की स्मृतियाँ-गंधपूर्ण झाग भरे जलाशयों में कूदना, बीमार होने पर दादी का दिन-रात सेवा करना, किशन भैया की शादी पर औरतों द्वारा किए जानेवाले गीत और अभिनय के समय चादर ओढ़कर सोना और पकड़े जाना साथ ही उसे रामी चाची की घटना भी याद आ जाती हैं।

ग) नदियाँ युगों-युगों से मानव जीवन के लिए कल्याणकारी रहीं है। ये युगों से एक माँ की तरह हमारा भरण-पोषण करती है। इनका जल भूमि की उर्वराशक्ति बढ़ाने में विशेष भूमिका निभाता है। इसलिए नदियाँ माता के समान पवित्र एवं कल्याणकारी है। मानव नदी को दूषित करने के में कोई कसर नहीं छोड़ता परन्तु इसके बावजूद भी अपार दुःख सहकर भी इस प्रकार का कल्याण केवल माता ही कर सकती है। अत: काका कालेलकर ने नदियों की माँ समान विशेषताओं के कारण उन्हें लोकमाता का दर्जा दिया है।

उत्तर- 3) क) अमीर-गरीब, सुख-दुःख, रात-दिन, तन-मन, मीठा-खट्टा, अपना-पराया, पाप-पुण्य आदि |

ख) स्वर्ण, तारक |

ग) विशेषण- नदियाँ, महिला

विशेष्य- चंचल, संभ्रांत

घ) नव-वन, राही-हीरा, धारा-राधा आदि |

ड) 1.बच्चे अपने उत्तरों को बोल-बोलकर याद कर रहे थे।

2.पुलिस ने अपराधी को पीट-पीटकर अधमरा कर दिया।

कक्षा परीक्षा

(हम पंछी उन्मुक्त गगन के, दादी माँ, हिमालय की बेटियाँ)

कक्षा:7

विषय: हिन्दी

प्रश्न 1. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दें:- (1*5=5)

होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा- होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी |
नीड़ न दो चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न- भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो |

क. कवि और कविता का नाम लिखिए?
ख. पक्षी क्या करना चाहते हैं?
ग. पक्षी मनुष्यों से क्या चाहते हैं?
घ. पक्षी अपने उड़ने का अधिकार बचाने के लिए क्या- क्या देने को तैयार हैं ?
ङ. 'विघ्न' का अर्थ लिखिए |

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दें:- (1*5=5)

एक दिन रास्ते में रामी की चाची मिली | वह दादी को 'पूतों फलो दूधों नहाओ' का आशीर्वाद दे रही थी! मैंने पूछा, "क्या बात है, धन्नो चाची", तो उसने विह्वल होकर कहा. "उरिन हो गई बेटा, भगवान भला करे हमारी मालकिन का | कल ही आई थीं | पीछे का सभी रुपया छोड़ दिया, ऊपर से दस रुपये का नोट देकर बोलीं, 'जैसी तेरी बेटी वैसी मेरी, दस-पाँच के लिए हँसाई न हो |' देवता है बेटा, देवता |"

क. यह गदयांश किस पाठ से लिया गया हैं ?
ख. रास्ते में कौन मिली ?
ग. रामी की चाची दादी को क्या आशीर्वाद दे रही थी ?
घ. दादी ने सारे पैसे छोड़कर ऊपर से कितने रूपए दिए ?
ङ. 'रुपया' का वचन बदलिए |

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर 'बसंत-2' के पाठों के आधार पर दें:- (5*2=10)

क. हर तरह की सुख सुविधा पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद क्यों नहीं रहना चाहते ?
ख. दादा की मृत्यु के बाद लेखक के घर की आर्थिक स्थिति ख़राब क्यों हो गई थी ?
ग. दादी माँ के स्वभाव का कौन- सा पक्ष आपको सबसे अच्छा लगता है और क्यों ?
घ. काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता क्यों कहा है ?
ङ. लेखक ने हिमालय की बेटियाँ किसे कहा है और क्यों ?

उत्तरमाला

उत्तर- 1)

क) कविता- हम पंछी उन्मुक्त गगन के, कवि- शिवमंगल सिंह सुमन |

ख) पक्षी क्षितिज से मिलन करना चाहते हैं |

ग) पक्षी मनुष्यों से अपने उड़ने का अधिकार चाहते हैं | वे चाहते हैं कि मनुष्य उनकी उड़ने की स्वतंत्रता में विघ्न न डाले |

घ) पक्षी अपना घोंसला और पेड़ की डालियों पर बनाया अपना ठिकाना भी देने को तैयार हैं लेकिन अपने उड़ने का अधिकार गवाँ देना उन्हें मंजूर नहीं हैं |

ड) 'विघ्न'- रूकावट, व्यवधान |

उत्तर- 2) क) दादी माँ |

ख) एक दिन रास्ते में रामी की चाची मिली |

ग) वह दादी को 'पूतों फलो दूधों नहाओ' का आशीर्वाद दे रही थी |

घ) दादी ने सारे पैसे छोड़कर ऊपर से दस रुपये का नोट दिया |

ड) रुपए |

उत्तर- 3) क) पक्षी उन्मुक्त होकर वनों की कड़वी निबोरियाँ खाना, खुले और विस्तृत आकाश में उड़ना, नदियों का शीतल जल पीना, पेड़ की सबसे ऊँची टहनी पर झूलना और क्षितिज से मिलन करने की इच्छाओं को पूरी करना चाहते हैं।

ख) दादा की मृत्यु के पश्चात् लेखक के घर की आर्थिक स्थिति खराब होने का कारण उनके पिताजी व भैया द्वारा धन का सही उपयोग न किया जाना था। ग़लत मित्रों की संगति से सारा धन नष्ट कर डाला। दादा के श्राद्ध में भी दादी माँ के मना करने पर भी लेखक के पिताजी ने अपार संपत्ति व्यय की।

ग) दादी माँ के स्वभाव का सेवा, संरक्षण, परोपकारी व सरल स्वभाव आदि का पक्ष हमें सबसे अच्छा लगता है। दादी माँ मुँह से भले कड़वी लगती थी परन्तु घर के सदस्यों तथा दूसरों की आर्थिक मदद के लिए हर समय तैयार रहती थी। रामी चाची का कर्ज माफ़ कर उसे नकद रूपए भी दिए ताकि उसकी बेटी का विवाह निर्विघ्न संपन्न हो जाए। इन्हीं के कारण ही वे दूसरों का मन जीतने में सदा सफल रहीं।

घ) नदियाँ युगों-युगों से मानव जीवन के लिए कल्याणकारी रहीं है। ये युगों से एक माँ की तरह हमारा भरण-पोषण करती है। इनका जल भूमि की उर्वराशक्ति बढ़ाने में विशेष भूमिका निभाता है। इसलिए नदियाँ माता के समान पवित्र एवं कल्याणकारी है। मानव नदी को दूषित करने के में कोई कसर नहीं छोड़ता परन्तु इसके बावजूद भी अपार दुःख सहकर भी इस प्रकार का कल्याण केवल माता ही कर सकती है। अत: काका कालेलकर ने नदियों की माँ समान विशेषताओं के कारण उन्हें लोकमाता का दर्जा दिया है।

ड) लेखक ने हिमालय से निकलने वाली नदियों को 'हिमालय की बेटियाँ' कहा है क्योंकि हिमालय उनका उद्गम स्थान है | उनका जन्म हिमालय की बर्फ पिघलने से हुआ है |

संचयी परीक्षा

कक्षा:7

विषय: हिन्दी

(हम पंछी उन्मुक्त गगन के, दादी माँ, हिमालय की बेटियाँ)

1. निम्नलिखित पठित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (1X5=5)

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे |
हम बहता जल पीने वाले
मर जाएँगे भूखे- प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबौरी
कनक-कटोरी की मैदा से |

क. कवि और कविता का नाम लिखिए ?

ख. पक्षी कैसे रहना पसंद करते हैं ?

ग. पक्षी कैसे नहीं गा पाएँगे ?

घ. कनक कटोरी की मैदा और कटुक निबौरी में से पंछी को क्या अच्छा लगता है और क्यों ?

ङ. 'निबौरी' का अर्थ लिखिए |

2. निम्नलिखित पठित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दें:- (1 X 5 = 5)

अभी तक मैंने उन्हें दूर से देखा था| बड़ी गंभीर, शांत, अपने आप में खोई हुई लगती थीं| संभ्रांत महिला की भांति वे प्रतीत होती थीं | उनके प्रति मेरे दिल में आदर और श्रद्धा के भाव थे| माँ और दादी, मौसी और मामी की गोद की तरह उनकी धारा में डुबकियाँ लगाया करता| परन्तु इस बार जब मैं हिमालय के कंधे पर चढ़ा तो वे कुछ और रूप में सामने थीं|

क) पाठ और लेखक का नाम लिखिए |

ख) 'बड़ी गंभीर, शांत, अपने आप में खोई हुई' - ये किसकी विशेषताएँ हैं?

ग) लेखक के मन में किसके प्रति आदर और श्रद्धा के भाव थे?

घ) लेखक द्वारा धारा में नहाने की तुलना किससे की गयी है?

ङ) लेखक ने किन्हें दूर से देखा था ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही पाँच के उत्तर 'बसंत-2' में पढ़े गए पाठों के आधार पर दीजिए:- (5 X2=10)

क. पक्षी उन्मुक्त रहकर अपनी कौन- सी इच्छाएँ पूरी करना चाहते हैं ?

ख. हर तरह की सुख सुविधा पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद क्यों नहीं रहना चाहते ?

ग. कनक कटोरी की मैदा और कटुक निबौरी में से पंछी को क्या अच्छा लगता है और क्यों ?

घ. लेखक को अपनी दादी माँ की याद के साथ-साथ बचपन की और किन-किन बातों की याद आती है?

ङ. काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता क्यों कहा है ?

च. 'हिमालय की बेटियाँ' पाठ में लेखक नदियों को किन रूपों में देखते हैं ?

उत्तरमाला

उत्तर- 1)

क) कविता- हम पंछी उन्मुक्त गगन के, कवि- शिवमंगल सिंह सुमन |

ख) पक्षी खुले आकाश में उड़ना व स्वतंत्र और स्वच्छंद रहकर जीना पसंद करते हैं |

ग) पक्षी पिंजरे में कैद होकर नहीं गा पाएँगे |

घ) पक्षियों को कटुक निबौरी अधिक पसंद है क्योंकि पराधीनता में मिले व्यंजन पक्षियों को भी अच्छे नहीं लगते हैं |

ड) निबौरी- नीम का फल |

उत्तर- 2.

क) पाठ- हिमालय की बेटियाँ, लेखक- नागार्जुन |

ख) हिमालय से निकलने वाली नदियों की |

ग) हिमालय से निकलने वाली नदियों के प्रति |

घ) माँ और दादी, मौसी और मामी की गोद से |

ड) नदियों को |

उत्तर- 3)

क) पक्षी उन्मुक्त होकर वनों की कड़वी निबोरियाँ खाना, खुले और विस्तृत आकाश में उड़ना, नदियों का शीतल जल पीना, पेड़ की सबसे ऊँची टहनी पर झूलना और क्षितिज से मिलन करने की इच्छाओं को पूरी करना चाहते हैं।

ख) पक्षी के पास पिंजरे के अंदर वे सारी सुख सुविधाएँ है जो एक सुखी जीवन जीने के लिए आवश्यक होती हैं, परन्तु हर तरह की सुख-सुविधाएँ पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद नहीं रहना चाहते क्योंकि उन्हें बंधन नहीं अपितु स्वतंत्रता पसंद है। वे तो खुले आकाश में ऊँची उड़ान भरना, बहता जल पीना, कड़वी निबौरियाँ खाना ही पसंद करते हैं।

ग) पक्षियों को कटुक निबौरी अधिक पसंद है क्योंकि पराधीनता में मिले व्यंजन पक्षियों को भी अच्छे नहीं लगते हैं | अपनी आज़ादी खोकर तथा अपने उड़ने का अधिकार गवाँकर सोने की कटोरी में मिलने वाले मैदे का पक्षियों के लिए कोई महत्व नहीं होता |

घ) जब लेखक को मालूम हुआ कि दादी माँ की मृत्यु हो गयी है तो उनके सामने दादी माँ के साथ बिताई गई कई यादें सजीव हो उठती है। उसे अपने बचपन की स्मृतियाँ-गंधपूर्ण झाग भरे जलाशयों में कूदना, बीमार होने पर दादी का दिन-रात सेवा करना, किशन भैया की शादी पर औरतों द्वारा किए जानेवाले गीत और अभिनय के समय चादर ओढ़कर सोना और पकड़े जाना साथ ही उसे रामी चाची की घटना भी याद आ जाती हैं।

ड) नदियाँ युगों-युगों से मानव जीवन के लिए कल्याणकारी रहीं है। ये युगों से एक माँ की तरह हमारा भरण-पोषण करती है। इनका जल भूमि की उर्वराशक्ति बढ़ाने में विशेष भूमिका निभाता है। इसलिए नदियाँ माता के समान पवित्र एवं कल्याणकारी है। मानव नदी को दूषित करने के में कोई कसर नहीं छोड़ता परन्तु इसके बावजूद भी अपार दुःख सहकर भी इस प्रकार का कल्याण केवल माता ही कर सकती है। अत: काका कालेलकर ने नदियों की माँ समान विशेषताओं के कारण उन्हें लोकमाता का दर्जा दिया है।

च) नदियों को माँ मानने की परंपरा भारतीय संस्कृति में अत्यंत पुरानी है। नदियों को माँ का स्वरुप तो माना ही गया है लेकिन लेखक नागार्जुन ने उन्हें बेटियों, प्रेयसी व बहन के रूपों में भी देखते है।